ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रित(प्रति) रूहानी बाप समझाये रहे हैं। पढ़ा रहे हैं। दुनियाँ नहीं जानती है कि सुप्रीम फादर जिसको परमपिता परमात्मा कहा जाता है वह कोई पढ़ाने आते हैं। बाप तो कहते हैं मैं तुम बच्चों को राजयोग सिखलाने आता हूँ। आत्माओं को पढ़ाता हूँ। आत्मा राजयोग से यह देवी–देवता बनती है। राजाई पद पाती है और पावन निर्विकारी भी ज़रूर बनना पड़ता है। कल्प पहले भी तुम ही यह देवी–देवता सम्पूर्ण निर्विकारी बने थे। शरीर भी तुम्हारा ऐसा गोरा था। फिर बदलता गया। तुम देवताएं सो फिर आकर असुर बने हो। आत्मा जो देवता थी वह असुर बनी है। सतोप्रधान आत्मा सो तमोप्रधान बनी है। आत्मा तमोप्रधान है तो शरीर भी तमोप्रधान, आत्मा सतोप्रधान बनती है तो शरीर भी सतोप्रधान बनता है। जैसा सोना (वै)सा ज़ेवर बनते हैं। आत्मा में खाद पड़ने से सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आती गई है फिर शरीर भी ऐसे ही मिलते हैं। यह देवताएं तो सतोप्रधान थे। समय भी सतोप्रधान था। अभी तो समय भी तमोप्रधान है। इन (ल.ना.) के आत्मा में और शरीर में खाद पड़ गई है। देवी–देवताएं जो सतोप्रधान थे वही नीचे उतरते आये हैं। अभी तो यह हैं नहीं। सिर्फ प्रतिमा को लेकर भक्ति करते हैं। तमोप्रधान मनुष्यों की तो भक्ति करनी नहीं होती है। पहले–2 भक्ति करते हैं परमात्मा की जिसने देवता बनाया। जब तुम भक्ति(भक्त) बनते हो तब ही पूजा करते हो। अभी तुम पूज्य बन रहे हो। तुम पुजारी थे , अंधश्रद्धा से पूजा करते थे। यह पता नहीं था ल.ना. जो पास्ट हो गये हैं वह इस समय भिन्न–2 नाम–रूप से असुर हैं। अभी किसकी पूजा करते हैं ? शरीर की। आत्मा तो है नहीं। आत्मा तो पुनर्जन्म लेते उतरती ही आई है ना। शरीर जो सतोप्रधान था वही बनाकर पूजते रहते हैं। तो पूजा किसकी करते है? तमोप्रधान तत्वों की। इन (जड़–चित्र) में आत्मा थोड़े ही है। सतयुग में तो यह चलते–फिरते राज्य करते थे। अभी राज्य करते हैं क्या? अभी तमोप्रधान बन गये हैं। आत्मा कहती है हम सो देवता थे फिर हम सो क्षत्री, हम सो वैश्य, हम सो शुद्र(शूद्र) बने हैं। सतयुग में हम सो देवता आठ जन्म थे फिर उतरे आये हैं। हम सो का अर्थ भी बाप ने समझाया है। पहले–2 हम ब्राह्मण थे। तुम ऐसे नहीं कहेंगे कि हम पहले–2 देवता थे। पहले है चोटी ब्राह्मण की। ब्राह्मण है इस संगमयुग पर। इनको पुरुषोत्तम संगम युग कहा जाता है। तुम शूद्र से ब्राह्मण बनते हो। वह लोग कह देते आत्मा सो परमात्मा। परमात्मा सो आत्मा। अभी बाप ने समझाया है तुम जानते हो हम ब्राह्मण ऊँच ते ऊँच हैं। तुम्हारा ही यह हीरे जैसा जन्म गाया जाता है। ब्राह्मण ऊँचे ते ऊँच हैं ; क्योंकि उन में ज्ञान है। तुम ब्राह्मणों को ही शिवबाबा पढ़ाते हैं। तुम जब देवता बनेंगे तो निराकार शिवबाबा थोड़े ही पढ़ावेंगे। उस समय तो देवताएँ ही पढ़ावेंगे। इस समय तुम हो संगम पर। बाकी सब हैं शूद्र। शूद्रों को शूद्र ही पढ़ाते हैं। शूद्र वर्ण में सब शूद्र ही शूद्र हैं। क्षत्री वर्ण मे सब क्षत्री ही क्षत्री हैं। वैश्य वर्ण में सब वैश्य ही वैश्य होंगे। अभी तुम ब्राह्मण बने हो। तुम ब्राह्मणों को बाप पढ़ाते हैं। फिर ब्रा. पढ़ाते हैं ब्राह्मणों को। इस समय तुम कौड़ी तुल्य बन पड़े हो। पैर तक हो। पैरों को शूद्र कहा जाता है। पैर धरती पर रहती(रहते) हैं ना। चोटी ऊँची रहती है। फिर देवता,.क्षत्री , वैश्य। अभी यह ज्ञान तुमको ही मिलता है। सतयुग में नहीं होगा। विराट रूप कैसे सो अभी तुम जानते हो। बाप पढ़ाते ही ब्राह्मणों को हैं ना कि शूद्रों को। जो बाप को जानते, निश्चय करते हैं उनको पढ़ाते हैं। ब्राह्मण बनेंगे तब तो पढ़ाई भी बुद्धि में बैठेगी। शूद्रों को बैठेगी नहीं; क्योंकि पहले–2 बताया जाता है तुम किसके बच्चे हो। लौकिक बाप का(के) या पारलौकिक। इतना बड़ा ज्ञान सभी के बुद्धि में बैठ न सके। न याद ही ठहर सकती है। अथाह ज्ञान है। जब से बाप आये हैं ज्ञान सुनाते ही रहते हैं। यह है मनुष्य से देवता बनने का ज्ञान। इस समय सब हैं शूद्र मनुष्य। वैश्य वर्ण का कोई भी नहीं। तमोप्रधान दुनियाँ है ना। तो यह इतना सब ज्ञान बुद्धि में रखना है। हम देवता थे। फिर अभी ब्राह्मण से देवता बनते हैं। प्यूरिटी है (फर्स्ट)। सतयुग में प्यूरिटी थी ना । देवताओं को सम्पूर्ण निर्विकारी कहा जाता है। बाबा ने बहुत लिखाया है कि अपन से पूछो सतयुगी शिवालय के रहने वाले हैं या

कलियुगी वैश्यालय के रहने वाले हो(हैं)। वैश्यालय होता ही है कलियुग में। तो ज़रूर कहना पड़े हम विषस(विशियस)–वैश्यालय के हैं। विशियस औ(र) वायसलेस। सीढ़ी जो बनाते हैं उनमें भी दिखाना चाहिए यह देवताएँ हैं। इनको शूद्र नमन करते हैं। सतयुग में नमन नहीं करेंगे एक/ दो को कायदा नहीं है। खुश–खैरियत पूछने की रसम ही कुछ होगी। गुडमॉर्निंग और नमस्ते आद नहीं होगी। वहां की रसम–रिवाज़ ही और होंगी। इस समय तुम वह रसम नहीं देख सकते हो। उसका नाम ही है शिवालय। हैविन। मच्छर आद काटने वाले वहां होते नहीं। यह सब बाद में हो जाते हैं। कालरा, प्लेग आद थोड़े ही होते हैं। अभी हो गये हैं। अभी तो यह है ही कलियुगी दुनियाँ। कलियुग में कितना कचड़ा आकर इकट्ठा हुआ है। जितना दृ(सृ)ष्टि तमोप्रधान होते गिरते जाते हैं उतना ही दुःखदायक वस्तु होती जाती है। सतयुग में यह होते नहीं। उसका तो नाम ही है सुखधाम। यह है दुःखधाम; इसलिए बाप को आना पड़ता है फिर से सुखधाम बनाने। तुम जानते हो बाबा हमारे दुःख हर कर सुख देते हैं ; परन्तु श्रीमत पर ज़रूर चलना पड़ेगा ना। बाबा ने कल रात को भी समझाया, बम्बई में ल.ना. का मन्दिर है। अभी वह हॉल शादियों लिए भी देते रहते हैं। तो उनके ट्रस्टियों को समझाना बहुत अच्छा है। भगवानुवाचः भल कृष्ण के लिए ही समझे। भगवानुवाचः काम महाशत्रु है, काम पर जीत पावेंगे वह जगत जीत का मालिक बनेंगे। वहां विकार होता ही नहीं। उनको तो कहा ही जाता है शिवालय। स्वर्ग। तो बड़े ही भभके से समझाना चाहिए। भगवान के यह महावाक्य हैं और तुम लोग फिर ऐसे स्थान पर शादी कराते रहते हो। अच्छा समझाने वाला जो हो बैठ समझावे। बाबा ने बहुत अच्छा लिखा था तुम कहां के रहने वाले हो? सतयुग के हो, कलियुग के हो? सतयुगी देवता हो या कलियुगी पतित हो ? भ्रष्टाचारी हो या श्रेष्ठाचारी हो? ऐसे–2 बहुत प्रश्न लिख सकते हैं। छपा कर फिर एरोप्लेन से गिराओ तो अपने से हरेक पूछे हम कौन हैं। वह भी बाबा ने समझाया, लिख सकते हैं भगवानुवाच काम महाशत्रु है। उन पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे। और यहां फिर मन्दिरों में शादियाँ करते रहते हैं। आगे घर में शादी होती थी। अभी शादियों के लिए मन्दिर भी बन गये हैं। शादी पर गुरू को भी ज़रूर बुलाते हैं। आजकल तो सगाई भी गुरू लोग कराते हैं। उन्हों को भी यह भूल गया है कि भगवानुवाचः काम महाशत्रु है। शंकराचार्य का फोटो तुम एक्युरेट सीढ़ी में दे सकते हो। या कार्टून मिसल। शिवलिंग की पूजा कर रहें हैं। और सरस्वती , जगत–अम्बा आद के भी चित्र रखते हैं। आगे उनके लिखना है पुजारी। ऊपर में पूज्य। सतयुग में जब पूज्य है तो पुजारी होते नहीं। कलियुग में सब पुजारी ही हैं। पुजारी को पूज्य कैसे कह सकते हैं? सतयुग में पुजारी होते नहीं। गायन भी आपे ही पूज्य.....तुम पहले–2 पूज्य थे फिर गिरते–2 पुजारी बने हो फिर पूज्य बनना है। भगवान आकर पुजारी को पूज्य बनाते हैं। प्वाइन्ट्स तो बहुत ही निकलती रहती है। वह मैजॉरिटी है असुरों की। और तुम्हारी है मैनॉरिटी। गाया हुआ है भीष्मपितामह आदि को कुमारियों ने बाण मारी है तब वह शरण में आये हैं। मरते नहीं। शरण में आते हैं। तुम्हारी अभी मैनॉरिटी है। फिर मैजॉरिटी होगी। लाखों को पैगाम मिलेगा। प्रजा तो बहुत बननी है। आवेंगे कुछ न कुछ समझेंगे। सिर्फ चक्र लगाकर भी जावेंगे। वह भी प्रजा बनती है। बहुत ढेर के ढेर प्रजा रहते हैं। कोई तो फिर अच्छी रीति धारण कर टीचर बन फिर औरों को समझावेंगे। नम्बरवार तो होते हैं। समझाना बहुत सहज है। बोलो दो बाप हैं। एक हद का दूसरा बेहद का। अभी बेहद का बाप कहते हैं पावन बनने लिए अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। थोड़ा भी याद किया तो प्रजा में आ जावेंगे। इससे जास्ती याद किया तो प्रजा में साहुकार बनेंगे। थोड़ा भी तमोप्रधान से सतोप्रधान बना तो आ जावेंगे। यह राजधानी स्थापन हो रही है। जो पूरा नहीं पढ़ते उनकी यहाँ भी वैल्यु नहीं। तो वहाँ भी वैल्यु नहीं रहेगी। पुरुषार्थ का टाईम यह है। पिछाड़ी में योग आदि के लिए समय नहीं मिलेगा। लज्जा आती रहेगी । थोड़े ही समय में इतने सब पाप थोड़े ही कट जावेगी। शुरू में

तो झुण्ड का झुण्ड आ गया। एकदम सरेण्डर हो गये। वह समय भी ऐसा था कहां जा नहीं सकते। भट्ठी में बैठे रहे। भट्ठी से सब ईंटें पककर थोड़े ही निकलते हैं। यह भी भट्ठी थी। कोई टूट पड़े कोई खंगर निकले। शरण में आये तो बाप के पास रहना ही पड़े। सारा नॉलेज पर मदार है। दिन–प्रतिदिन नॉलेज बहुत होती जावेगी। ज़रूर दो अक्षर कहना पड़ेगा। दो बाप है। बेहद का बाप आते हैं तब तो शिवजयन्ति मनाते हैं। स्वर्ग का रचता बाप है तो ज़रूर स्वर्ग की बादशाही दी होगी। रचयिता एक ही शिव है। बाकी कृष्ण आद सब हैं रचना। शिवबाबा ने ही राजयोग सिखाया होगा। तब तो बने होगे ना। गाया भी जाता है ऊँच तो ऊँच भगवान। फिर ऊँच ते ऊँच यह ल.ना.। यह कैसे बने सो ज़रूर तुम जानते हो। बहुत जन्मों के अंत के भी अंत के जन्म में बाप ने राजयोग सिखाया था। बहुत जन्म तो भारतवासियों के ही होते हैं। उसमें भी जो पहले–2 सृष्ट पर आये होंगे। पहले–2 तो यह ल.ना. ही आवेंगे। इनको ऐसा ज़रूर कोई ने तो बनाया होगा। ज़रूर पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बने होंगे। उत्तम ते उत्तम पुरुष है ही यह। यथा राजा–रानी तथा प्रजा। अभी राजाई स्थापन हो रही है। अभी यह लोग शादियों के लिए हॉल देते हैं। बोलो , यह तो तुम कतलाम करने लिए बना कर देते हो। एक/ दो पर काम कटारी चलाना यह तो हिंसा है ना। इससे तो हमको हॉल दे दो, हम तो सभी को अहिंसक बनावेंगे। सतयुग में डबल अहिंसक होते हैं। अभी हैं डबल हिंसक। अभी समझावें भी किसको? एक को समझाओ तो दूसरा माथा खराब कर दे। अभी किसको माने? बनाने वाले खुद मर जाते हैं तो फिर ट्रस्टियों को दे देते हैं। तो बाप से नये–2 प्वाइन्ट्स तो मिलती ही रहती है। भगवानुवाच काम महाशत्रु है। यह तो बड़ी हिंसा है। यह हिंसा अपने घर में जाकर करे। तुम हॉल में यह हिंसक काम कराने क्यों निमित्त बनते हो? बहुत पापात्मा बनेंगे। तुमने पापात्मा बनने लिए हॉल बनाया है। तुम समझेंगे यह कहते तो बरोबर ठीक हैं। हो सकता है कुछ मदद भी दें। बोलो, हम तो हिंसक को अहिंसक, मनुष्य को देवता बनाते हैं, एमऑब्जेक्ट ही यह है। हैं तो वह भी मनुष्य ना। जो सतोप्रधान देवता थे वही अभी तमोप्रधान बने हैं। गायन भी सत का संग तारे कुसंग बोरे। रावण का संग बोरा है ना। वह समझते हैं रावण तो परम्परा से ही। अभी तुम समझते हो रामराज्य में रावण फिर कहां से आया। एकदम जैसे बन्दर बुद्धि हैं। जनावर कहो, बन्दर बुद्धि कहो, कांटा कहो यह है ही कांटों का जंगल। अभी बाप समझा रहे हैं तुम स्वर्ग के मालिक कैसे बनेंगे। अभी इस छी–2 दुनियाँ से दिल नहीं लगानी है। तुमको बिज़ी ही इस धंधे रहना है। मनुष्य को देवता बनाना। भल शरीर निर्वाह अर्थ मेहनत करो। हमारा काम ही भारतवासियों से है। 84 जन्मों ज्ञान भी भारतवासियों के लिए है ना। और तो 84 जन्म लेते हीं नहीं हैं। तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। साथ में यह भी पूछो तुमको कितने बाप है? एक है लौकिक, दूसरा है पारलौकिक। पतितों को पावन बनाने वाला तो पारलौकिक बाप ही है, वह एवर पावन है। पावन दुनियाँ बाप ही बनाते हैं। अभी तुमको बाप से बेहद विश्व का मालिक बनना है तो पुरुषार्थ करो। सतयुग में पतित होते नहीं। वह है पावन दुनियाँ। अभी तुम पतित दुनियाँ में हो। अभी बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारे जन्म–जन्मांतर के पाप कट जावेंगे। तुम स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे। बाप का परिचय मिला, तो लायक बन जावेंगे। बाकी तो जितनी याद की यात्रा उतना ऊँच पद। सब तो राजा–रानी नहीं बनेंगे। वहां वज़ीर होता नहीं। वह खुद ही सर्वगुण सम्पन्न,16 कला सम्पूर्ण होते हैं। जब बहुत पापात्मा बन जाते हैं तब वज़ीर , गुरू, आदि रखना पड़ता है। वहां तो दरकार ही नहीं। बाप से ताकत ली हुई है। सारे विश्व पर राज्य करते हैं। कोई छीन न सके। उनको कहा जाता है 21 जन्मों लिए अटल,अखण्ड राज्य। बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने वाला है। तुम्हारी बुद्धि में यह सारा चक्र है। कैसे सीढ़ी उतरनी होती है। बाप कहते तुम जैसे जीन हो। सैकण्ड में चढ़ते हो फिर उतरते हो। उतरने और चढ़ने का पार्ट मिला हुआ है। तुमको

16 कला सम्पूर्ण, चढ़ती कला से बनते हो। फिर कला कम होते–2 लिक बच जाती है। इस समय तुम कहेंगे ना कला। ..... जनावर कांटे हैं ना ; इसलिए वर्थ नॉट अपेनी कहा जाता है। भारत सोने की चिड़िया थी। अभी तो कुछ भी नहीं है। सोने का महल कोई बना न सके। इतना सोना है ही कहां? कहते हैं सोने की द्वारका, लंका अद(आदि) थी। सतयुग में न तो लंका न द्वारका होती है। यह तो नाम रख दिये हैं। समुद्र के किनारे सतयुग में गांव नहीं होते हैं। सिर्फ मथुरा, वृंदावन गंगा–जमुना यहां ही गांव होंगे। हैदराबाद भी नहीं होगी। बम्बई तो होगी ही नहीं। बाप कहते हैं कल तुम विश्व के मालिक थे, अभी गुलाम बन पड़े हो। जो मालिक थे वही फिर ब्राह्मण बनेंगे। बाप साक्षी हो देखते हैं। तुम भी देखते हो। कौन राजा–रानी, कौन दास–दासियां आद बनेंगी। यह सब समझ जावेंगे। बुद्धि भी कहती है, पतित से पावन न बनेंगे तो जन्म भी ऐसा ही मिलेगा। इस समय तो सब पतित हैं। विकार से पैदा होते हैं। विख और अमृत गाया जाता है। तुमको ज्ञान–अमृत मिलता है। ज्ञान सागर एक ही बाप है। बाकी शास्त्रों में है भक्ति। भाक्ति के गुरू ढेर हैं, ज्ञान के गुरू एक ही हैं। यहां तो सारी दुनियाँ में भक्ति ही भक्ति है। बेहद का बाप तो समर्थ है। वह गुरू लोग को(ई) समर्थ नहीं हैं। बाप पूछते हैं हमने तुमको विश्व की बादशाही दी, पवित्र बनाया फिर तुमको अपवित्र किसने बनाया? है ही रावण राज्य ना। यहां सबमें विकार हैं। सब विख से पैदा होते हैं; इसलिए भ्रष्टाचारी कहा जाता है। देवताएं हैं श्रेष्ठाचारी। बाबा युक्ति तो बताते हैं। अभी देखेंगे कैसे मन्दिरों में जाकर समझाते हैं। देखें कोई पदमभाग्यशाली निकलता है जो मान ले। तुम पदम भाग्यशाली बनते हो। वहां विधवा आद बनती ही नहीं। अकाले मृत्यु होती ही नहीं। आयु पूरी होती है तो सा. होता है। 21 पीढ़ी पूरी सबको मिलती है। 21 जन्म 21 पीढ़ी। समय पूरा होने से शरीर छूटता है। वह है ही अमरलोक। यह है मृत्युलोक। यह ल.ना. अमरलोक के मालिक थे ना। अमरलोक के मालिक थे तो सॉलवेन्ट थे। मृत्युलोक के मालिक बनते हैं तो पूरे इनसॉलेवेन्ट बन पड़ते हैं। सबसे भीख मांगते रहते। भारतवासी ही अमरलोक के मालिक थे। अभी मृत्युलोक के मालिक हैं। तुमको कोई कुछ भी कह न सकेंगे। यह तो रीयल बात है ना बाबा ने कहा था कार्टून बनाओ ; परन्तु कोई पुरुषार्थ ही नहीं करते हैं। कार्टून में भी सीढ़ी बहुत बन सकती है। सबसे बड़ी बननी चाहिए। कलकत्ते में बड़े बना रहे हैं। मनुष्य को समझाने लिए भिन्न–2 युक्तियां रची जाती हैं। डॉक्टरों को भी तुम जाकर समझा सकते हो। हम ऐसे सर्जनरी(सर्जरी) करते हैं जो 21 जन्म कब बीमार ही नहीं होंगे। तुम तो दवाई करते हो फिर बीमार हो जाते। सतयुग में आत्मा और शरीर दोनों ही सतोप्रधान बन जाती है। अभी तमोप्रधान है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो पाप नष्ट हो जाये। गीता पढ़ने वालों को सहज होगा। वही शिव की ल.ना. के पुजारी होंगे। जो मेरे पुजारी हैं उनको ही ज्ञान दो। उनकी बुद्धि में बैठेगा। मन्दिरों में सर्विस बहुत होगी। बैज पर सर्विस कर सकते हैं। बेहद का बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। रोज़–2 गुह्य–2 बातें सुनाते रहते हैं। दिन–प्रतिदिन ऊँच ज्ञान मिलता जावेगा। कितने सेन्टर्स खुलते रहते हैं। बाबा कहते हैं घेराव डालो। ग़रीब भी आकर सुनेंगे। नॉलेज है र्सोस ऑफ इनकम। बल मिलेगा योग से। योग न है तो बल मिलता नहीं ;इसलिए सर्विस भी ढीली पड़ जाती है। जो चार्ट रखते होंगे उनका अटेन्शन जास्ती रहता होगा। तुम खुला कह सकते हो हम भी पहले भक्ति करते थे। अभी समझते हैं भक्ति दुर्गति थी। किसकी पूजा करते थे? आत्मा की या पांच तत्वों की? पहले शिव की पूजा करते थे वह फिर अच्छे थे। अभी तो तुम भूत की(देवी) बन गये हो। पूजा आद न करने से नाराज़ होते हैं तो उनको राजी करने लिए घर में मूर्ति आद रख दो। अन्दर में तो तुमको निश्चय है ना। वहां बैठे भी तुम शिवबाबा को याद करो। राज़ी करो तो घर में खिट–2 न होगी। खुश करने लिए करने में कोई हर्जा नहीं है। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। बच्चों को रूहानी बाप की नमस्ते।